शिमशोन की पहेली: खानेवाले में से निकला भोजन, और बलवन्त में से निकली मिठास

न्यायियों 14:13–14 (ERV-HI)

उन्होंने उससे कहा, ‘हमें अपनी पहेली बताओ, हम उसे सुनना चाहते
हैं।’

उसने उनसे कहा:

खानेवाले में से निकला भोजन,

और बलवान में से निकली मिठास।

पहेली का मूल

यह पहेली शिमशोन के जीवन में हुई एक अद्भुत और ईश्वरीय घटना से उत्पन्न हुई। जैसा कि न्यायियों 14 में लिखा है, शिमशोन अपने माता–पिता के साथ तिम्ना नामक पलिश्ती नगर में गया ताकि वह वहाँ की एक स्त्री से विवाह कर सके।

रास्ते में एक जवान सिंह ने अचानक उस पर हमला किया। परन्तु यहोवा का आत्मा उस पर जोर से उतरा और उसने सिंह को ऐसे फाड़ डाला जैसे कोई बकरी

का बच्चा फाड़ देता है, जबकि उसके हाथ में कोई हथियार न था (न्यायियों 14:6)। यह घटना इतनी सहज लगी कि उसने इसे अपने माता–पिता को भी नहीं बताया।

सिंह के शव में मधु का चमत्कार

कुछ दिन बाद जब शिमशोन फिर से तिम्ना गया, तो उसने उसी स्थान पर कुछ अद्भुत देखा। सिंह की लाश के भीतर मधुमक्खियों ने छत्ता बना लिया था और उसमें मधु भरा था। शिमशोन ने उसमें से मधु निकाला और खाया, और अपने माता–पिता को भी दिया, परन्तु यह नहीं बताया कि वह मधु कहाँ से आया (न्यायियों 14:8–9)।

यह वास्तव में एक चमत्कार था। मधुमक्खियाँ सृष्टि के सबसे शुद्ध प्राणियों में गिनी जाती हैं, जो फूलों और सुगंधित स्थानों को खोजती हैं, न कि मृत्यु या सड़न को। किसी मृत शरीर में छत्ता बनाना और उसमें मधु पैदा होना बिल्कुल अस्वाभाविक है।

और भी आश्चर्य की बात यह है कि मधुमक्खियाँ सामान्यतः महीनों लगाती हैं पर्याप्त मधु बनाने में, पर यहाँ थोड़े ही समय में भरपूर मधु तैयार था।

पहेली का छिपा हुआ सबक

यह घटना केवल एक विचित्र बात नहीं थी, बल्कि परमेश्वर का संदेश था। शिमशोन ने इसमें गहरी आत्मिक सच्चाई पहचानी और उससे यह पहेली बनाई:

खानेवाले में से निकला भोजन,

और बलवान में से निकली मिठास। (न्यायियों 14:14)

उसने यह पहेली पलिश्तियों से अपने विवाह भोज में पूछी। वह जानता था कि किसी मनुष्य की बुद्धि इसे हल नहीं कर सकती। केवल परमेश्वर या वह स्वयं ही इसका रहस्य बता सकता था। पलिश्तियों ने अंततः उसकी पत्नी को दबाव में डालकर उत्तर प्राप्त किया।

उन्होंने उत्तर दिया:

मधु से क्या मीठा है? और सिंह से क्या बलवान है? (न्यायियों 14:18)

शिमशोन क्रोधित हुआ, न इसलिए कि उन्होंने उत्तर दिया, बल्कि इसलिए कि उन्होंने छल से उत्तर पाया।

सिंह से निकला मधु

इसका आत्मिक संदेश गहरा है:

कभी–कभी सबसे बड़े आशीर्वाद, मिठास और प्रावधान सबसे भयानक और खतरनाक परिस्थितियों से निकलते हैं।

आधुनिक भाषा में यह ऐसा कहा जा सकता है:

“जिसने मुझे नष्ट करना चाहा, उसी से मुझे आहार मिला। जिसने मेरे जीवन को धमकाया, उसी से मुझे आनन्द मिला।”

यह परमेश्वर की अद्भुत व्यवस्था को दिखाता है:

वह दुःख से मिठास लाता है, दबाव से प्रावधान लाता है, और अस्त–व्यस्तता से चमत्कार करता है।

जैसा कि रोमियों 8:28 (ERV-HI) कहता है:

और हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिये
सब बातें मिलकर भलाई ही उत्पन्न करती हैं; अर्थात उन्हीं के लिये
जो उसके उद्देश्य के अनुसार बुलाए गए हैं।

यह सिद्धांत शास्त्र में बार–बार दिखता है

1. एलीशा और सामरिया की घेराबंदी – 2 राजा 6–7

जब अराम का राजा नगर को घेर कर बैठा था, तो एलीशा का सेवक डर गया। परन्तु एलीशा ने कहा:

मत डर, क्योंकि जो हमारे संग हैं वे उनसे अधिक हैं जो उनके संग हैं। (2 राजा 6:16)

फिर परमेश्वर ने सेवक की आँखें खोलीं, और उसने स्वर्गीय सेना देखी।

बाद में, सामरिया में भयंकर अकाल पड़ा। पर एलीशा ने भविष्यवाणी की:

यहोवा यों कहता है: कल इसी समय एक सीआ महीन आटा एक शेकेल में
मिलेगा। (2 राजा 7:1)

और सचमुच, शत्रु सेना भाग गई और बहुतायत छोड़ गई। शत्रु जो विनाश लाया था, वही परमेश्वर का प्रावधान बन गया।

2. मिस्र में यूसुफ – उत्पत्ति 39–41

यूसुफ पर झूठा दोष लगाया गया और उसे कई वर्षों तक जेल में रहना पड़ा। फिर भी उसने परमेश्वर को दोष न दिया। अंततः, परमेश्वर ने उसे एक ही दिन में कैदी से मिस्र का प्रधान बना दिया।

फिरौन, जो उसके लिए “सिंह” था, वही उसके और उसके लोगों के लिए “मधु” का स्रोत बन गया।

तुमने मेरे विरुद्ध बुराई का विचार किया था, परन्तु परमेश्वर ने
उसे भलाई के लिये ठहराया। (उत्पत्ति 50:20)

आज के विश्वासियों के लिए संदेश

प्रिय मसीही भाई–बहन,

यदि तुमने हर कीमत पर यीशु का अनुसरण करने का निश्चय किया है, तो परीक्षाओं, सताव या विरोध से निराश मत हो। यह समझ लो:

जो शत्रु तुम्हें नष्ट करने की सोचता है, वही परमेश्वर के हाथों तुम्हारे आशीर्वाद का साधन बन सकता है।

जैसे शिमशोन ने सिंह की लाश में से मधु पाया, वैसे ही परमेश्वर तुम्हारे जीवन की सबसे कठिन परिस्थितियों में आनन्द, बुद्धि और उन्नति दे सकता है।

जैसा कि 2 कुरिन्थियों 4:17 (ERV-HI) कहता है:

क्योंकि हमारा यह हल्का और क्षणिक क्लेश हमारे लिये अत्यधिक और अनन्त महिमा उत्पन्न करता है।

शिमशोन की पहेली केवल कविता नहीं है, यह एक आत्मिक सिद्धांत है:

खानेवाले में से निकला भोजन, और बलवान में से निकली मिठास। (न्यायियों 14:14)

तुम्हारा विश्वास

तुम्हारे “सिंहों” (शत्रु, भय, कठिनाइयाँ) से मधु निकलेगा।

तुम्हारे संघर्षों से मिठास और बल निकलेगा।

तुम्हारी लड़ाइयों से आशीर्वाद आएगा।

इसलिए प्रभु में दृढ़ रहो, शांति रखो और परीक्षा में उस पर भरोसा करो।

सिंह में मधु है—even अगर अभी तुम उसे न देख पाओ।

आमीन।

[illegible]

Share on:
WhatsApp

Print this post